Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-3* *Issue-9* *September 2026*

www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

ग्रामीण परिवारों में पीढ़ियों के बीच देखभाल, सहयोग एवं भावनात्मक संबंधों का बदलता स्वरूपः दरभंगा जिले के बरही गाँव के विशेष संदर्भ में

डॉ0 काएनात फातमा

पीएच.डी, समाजशास्त्र, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

Article Info: *(Recieved- 02/07/2026, Accept- 10/08/2026, Published- 05/09/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i9001

सार

भारतीय ग्रामीण समाज में परिवार केवल जैविक संबंधों का समूह नहीं, बल्कि देखभाल, सहयोग, सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक हस्तांतरण और भावनात्मक जुड़ाव की एक महत्वपूर्ण संस्था रहा है। विशेष रूप से ग्रामीण परिवारों में वृद्ध माता–पिता, वयस्क संतान तथा बच्चों के बीच संबंध पारंपरिक रूप से पारस्परिक निर्भरता और उत्तरदायित्व पर आधारित रहे हैं। किंतु शिक्षा के विस्तार, रोजगार के बदलते अवसर, ग्रामीण–नगरीय प्रवास, तकनीकी परिवर्तन, परिवार के आकार में कमी, व्यक्तिगत आकांक्षाओं तथा जीवन–शैली में परिवर्तन ने पीढ़ियों के बीच संबंधों के स्वरूप को प्रभावित किया है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य दरभंगा जिले के बरही गाँव के विशेष संदर्भ में ग्रामीण परिवारों में पीढ़ियों के बीच देखभाल, सहयोग और भावनात्मक संबंधों में हो रहे परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है। अध्ययन में परिवार को एक गतिशील सामाजिक संस्था मानते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि संयुक्त एवं विस्तारित परिवारों की परंपरागत व्यवस्था के साथ–साथ एकल परिवार, प्रवास और बदलती आर्थिक परिस्थितियाँ किस प्रकार अंतरपीढ़ी संबंधों को पुनर्गठित कर रही हैं।

मुख्य शब्दः ग्रामीण परिवार, पीढ़ियों के बीच संबंध, अंतरपीढ़ी सहयोग, वृद्ध देखभाल, भावनात्मक संबंध, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, बरही गाँव, दरभंगा।

1. परिचय

परिवार समाज की सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाओं में से एक है। भारतीय समाज में परिवार का महत्व केवल विवाह और प्रजनन तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि परिवार व्यक्ति के सामाजिकरण, आर्थिक सहयोग, भावनात्मक सुरक्षा, सांस्कृतिक परंपराओं के हस्तांतरण और जीवन के विभिन्न चरणों में देखभाल की व्यवस्था का प्रमुख आधार रहा है। ग्रामीण समाज में इसका महत्व और अधिक दिखाई देता है, क्योंकि कृषि, घरेलू उत्पादन, संपत्ति, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा दैनिक जीवन का एक बड़ा हिस्सा लंबे समय तक पारिवारिक संबंधों से जुड़ा रहा है।

भारतीय ग्रामीण परिवारों में विभिन्न पीढ़ियों का एक साथ रहना पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषता रही है। दादा–दादी, माता–पिता, पुत्र–पुत्रवधू तथा पोते–पोतियों के बीच पारस्परिक निर्भरता से परिवार का सामाजिक और भावनात्मक जीवन संचालित होता रहा है। वृद्ध पीढ़ी बच्चों के सामाजिकरण तथा पारिवारिक परंपराओं के संरक्षण में योगदान देती रही, जबकि युवा पीढ़ी वृद्ध सदस्यों की आर्थिक तथा शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती रही। इस व्यवस्था में देखभाल को केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं माना जाता था, बल्कि परिवार के विभिन्न सदस्यों के बीच दायित्वों का विभाजन पाया जाता था।

हालाँकि, आधुनिक सामाजिक परिवर्तन ने इस व्यवस्था को प्रभावित किया है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा, रोजगार के नए अवसर, ग्रामीण युवाओं का प्रवास और संचार तकनीक के विस्तार ने परिवार के आकार और कार्यों में परिवर्तन किया है। भाट और ध्रुवराजन ने भारतीय संदर्भ में संकेत किया कि आर्थिक परिवर्तन तथा संयुक्त परिवार के कमजोर होने की प्रक्रिया अंतरपीढ़ी संबंधों को प्रभावित करती हैय विशेष रूप से ग्रामीण परिवारों में भूमि और पारंपरिक आर्थिक संबंधों की भूमिका में परिवर्तन महत्वपूर्ण है।

दरभंगा जिला बिहार के महत्वपूर्ण ग्रामीण–सामाजिक क्षेत्रों में से एक है। 2011 की जनगणना में दरभंगा की जनसंख्या 39,37,385 दर्ज की गई थी और जिले के लिए ग्राम एवं उप–जिला स्तर तक जनसांख्यिकीय आँकड़े उपलब्ध हैं। ऐसे क्षेत्र में परिवार और अंतरपीढ़ी संबंधों का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ परंपरागत पारिवारिक मूल्यों और आधुनिक सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन दोनों का प्रभाव दिखाई देता है।

बरही गाँव को अध्ययन की स्थानीय इकाई के रूप में लेकर यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि आज ग्रामीण परिवारों में वृद्धों की देखभाल कौन करता है, आर्थिक और घरेलू सहयोग किस प्रकार होता है, युवा और वृद्ध पीढ़ी एक–दूसरे के साथ कितना समय बिताती हैं तथा भावनात्मक संबंधों में किस प्रकार के परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं।

2. साहित्य समीक्षा

भारतीय समाज में अंतरपीढ़ी संबंधों पर अनेक समाजशास्त्रीय और जनसांख्यिकीय अध्ययनों में परिवार, वृद्धावस्था, सह–निवास, पारिवारिक सहायता तथा सामाजिक समर्थन को महत्वपूर्ण विषय माना गया है।

चड्ढा (2004) ने भारतीय संदर्भ में अंतरपीढ़ी संबंधों का अध्ययन करते हुए बताया कि वृद्ध व्यक्ति परिवार एवं समुदाय में ज्ञान, अनुभव और सामाजिक परंपराओं के वाहक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय परिवारों में संरचनात्मक परिवर्तन के बावजूद वृद्धों के प्रति सम्मान और पारिवारिक संबंधों की सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है।

कुमार (1999) ने बदलती पारंपरिक पारिवारिक संरचना के संदर्भ में वृद्धों की स्थिति का विश्लेषण किया। उनके अनुसार औद्योगीकरण, नगरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण पारिवारिक संरचना में परिवर्तन आया है तथा पारंपरिक अंतरपीढ़ी संबंधों पर इसका प्रभाव पड़ा है।

भाट और ध्रुवराजन (2001) ने भारत में वृद्धावस्था और अंतरपीढ़ी संबंधों पर चर्चा करते हुए बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार लंबे समय से वृद्धों की सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा का प्रमुख आधार रहा है। किंतु आर्थिक संरचना में परिवर्तन, शहरीकरण और नई पीढ़ी की बदलती आकांक्षाओं ने पारंपरिक पारिवारिक दायित्वों को प्रभावित किया है।

सेबेस्टियन एवं सेखर 2009 के क्षेत्रीय अध्ययन में पाया गया कि भारत में संयुक्त से एकल परिवार की ओर संक्रमण के बावजूद अनेक वृद्ध अभी भी अपनी संतान के साथ रहते हैं। उनके अध्ययन में दैनिक बातचीत, पोते–पोतियों के साथ समय बिताने तथा आर्थिक रूप से आश्रित वृद्धों को संतान द्वारा सहायता देने जैसे अंतरपीढ़ी संबंधों के विभिन्न रूप सामने आए।

बंसोड (2012) के ग्रामीण महाराष्ट्र संबंधी अध्ययन में पारिवारिक समर्थन और वृद्धों के सामाजिक समायोजन के बीच संबंध पाया गया। अध्ययन में संयुक्त परिवार में रहने वाले वृद्धों में सामाजिक समायोजन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया तथा पारिवारिक देखभाल प्राप्त करने वाले वृद्धों की सामाजिक स्थिति अधिक अनुकूल थी।

ग्रामीण भारत में सामाजिक समर्थन पर किए गए एक अध्ययन में 460 वृद्ध व्यक्तियों के बीच सामाजिक समर्थन की स्थिति का अध्ययन किया गया। अध्ययन में 53.48 प्रतिशत वृद्धों में उच्च स्तर का सामाजिक समर्थन और 38.47 प्रतिशत में मध्यम स्तर का सामाजिक समर्थन पाया गया। अध्ययन ने अंतरपीढ़ी गतिविधियों और सामाजिक मंचों को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

गोपाल एवं जेयसीलन (2024) ने ग्रामीण भारतीय परिवारों में वृद्धों के पारिवारिक समर्थन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया। उन्होंने ग्रामीण संयुक्त परिवार को वृद्धों के सामाजिक समर्थन का महत्वपूर्ण आधार माना, लेकिन पारिवारिक विभाजन और पीढ़ियों के बीच समझौते की कठिनाइयों को भी महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में प्रस्तुत किया। हाल के शोध में अंतरपीढ़ी संबंधों को केवल वृद्ध देखभाल तक सीमित न रखकर पारस्परिक सीखने और सामाजिक जुड़ाव के रूप में भी देखा जा रहा है। महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए अंतरपीढ़ी

कार्यक्रमों से संबंधित शोध में वृद्धों के सामाजिक जुड़ाव, उपयोगिता की भावना तथा युवा पीढ़ी के साथ सहभागिता को बढ़ाने की संभावनाएँ सामने आई हैं।

नवीन अध्ययनों से यह भी संकेत मिलता है कि परिवार में देखभाल का स्वरूप केवल सह–निवास से निर्धारित नहीं होता। जीवनसाथी की उपस्थिति, बच्चों की निकटता और विस्तारित परिवार के सदस्यों की उपलब्धता देखभाल के स्वरूप को प्रभावित करती है।

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि परिवार में परिवर्तन का अर्थ अंतरपीढ़ी संबंधों का पूर्ण विघटन नहीं है। बल्कि संबंधों का स्वरूप अधिक बहुआयामी हो रहा है। प्रस्तुत अध्ययन इसी परिवर्तन को दरभंगा जिले के बरही गाँव के स्थानीय सामाजिक संदर्भ में समझने का प्रयास करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. बरही गाँव के ग्रामीण परिवारों में विभिन्न पीढ़ियों के बीच देखभाल और सहयोग के बदलते स्वरूप का अध्ययन करना।
2. वृद्ध, वयस्क तथा युवा पीढ़ियों के बीच भावनात्मक संबंध, संवाद और पारिवारिक सहभागिता का विश्लेषण करना।
3. परिवार की संरचना, प्रवास, आर्थिक स्थिति और आधुनिक जीवन–शैली के अंतरपीढ़ी संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

4. शोध–पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन समाजशास्त्रीय वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन की क्षेत्रीय इकाई दरभंगा जिले का बरही गाँव है। दरभंगा के ग्राम–स्तरीय जनसांख्यिकीय आँकड़े भारत की जनगणना 2011 के आधिकारिक स्रोतों से प्राप्त किए जा सकते हैं। अध्ययन वर्णनात्मक–विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसका केंद्र परिवार में रहने वाली विभिन्न पीढ़ियों के बीच देखभाल, आर्थिक सहयोग, घरेलू सहयोग, संवाद और भावनात्मक संबंध हैं। अध्ययन की इकाई ग्रामीण परिवार है। परिवार के भीतर वृद्ध, वयस्क और युवा सदस्यों के बीच संबंधों को विश्लेषण की मुख्य इकाई माना गया है। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के आधार पर 100 परिवारों का चयन किया गया है। प्राथमिक आँकड़े एक संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त किए गए हैं। इसके अतिरिक्त वृद्ध सदस्यों, वयस्क सदस्यों और युवाओं से अर्ध–संरचित साक्षात्कार लेकर गुणात्मक जानकारी भी प्राप्त की गई है। द्वितीयक सामग्री के लिए शोध–पत्र, पुस्तकें, सरकारी रिपोर्टें तथा परिवार एवं वृद्धावस्था संबंधी प्रकाशित अध्ययनों का उपयोग किया गया है।

5. आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

तालिका 1: परिवार की संरचना और पीढ़ियों के सह–निवास की स्थिति

क्र.सं.	परिवार की संरचना	परिवारों की संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त परिवार	42	42
2	अर्द्ध–संयुक्त / विस्तारित परिवार	23	23
3	एकल परिवार	35	35
4	कुल	100	100

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि नमूने में 42 प्रतिशत परिवार संयुक्त परिवार की संरचना में हैं, जबकि 35 प्रतिशत परिवार एकल परिवार के रूप में पाए गए। 23 प्रतिशत परिवार अर्द्ध–संयुक्त या विस्तारित स्वरूप के हैं। इससे संकेत मिलता है कि ग्रामीण परिवारों में संयुक्त परिवार अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन एकल परिवार भी पर्याप्त मात्रा में उपस्थित हैं। इसे पारंपरिक व्यवस्था के पूर्ण विघटन के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। बल्कि ग्रामीण परिवारों में परिवार के आकार और सह–निवास के साथ संबंधों के तरीके बदल रहे हैं। संयुक्त परिवार में वृद्धों और युवाओं के बीच दैनिक संपर्क अधिक सहज हो सकता है, जबकि एकल परिवार में भावनात्मक और आर्थिक संबंध सह–निवास के बजाय फोन, यात्रा और आर्थिक सहायता के माध्यम से कायम रह सकते हैं।

तालिका 2: विभिन्न पीढ़ियों के बीच देखभाल एवं सहयोग का प्रमुख स्वरूप

क्र.सं.	सहयोग/देखभाल का प्रमुख स्वरूप	परिवारों की संख्या	प्रतिशत
1	वृद्धों की दैनिक शारीरिक देखभाल	28	28
2	आर्थिक सहायता	19	19
3	घरेलू कार्यों में सहयोग	17	17
4	बच्चों की देखभाल में दादा–दादी की भूमिका	15	15
5	स्वास्थ्य संबंधी सहयोग	11	11
6	फोन/दूरस्थ संपर्क द्वारा सहयोग	10	10
7	कुल	100	100

तालिका 2 से पता चलता है कि अंतरपीढ़ी सहयोग का सबसे प्रमुख स्वरूप दैनिक शारीरिक देखभाल है, जो 28 प्रतिशत परिवारों में प्रमुख है। इसके बाद आर्थिक सहायता 19 प्रतिशत और घरेलू कार्यों में सहयोग 17 प्रतिशत है। 15 प्रतिशत परिवारों में दादा–दादी द्वारा बच्चों की देखभाल अंतरपीढ़ी सहयोग का प्रमुख रूप है। इससे स्पष्ट होता है कि वृद्ध व्यक्ति केवल सहायता प्राप्त करने वाले सदस्य नहीं हैं, बल्कि वे परिवार को सहायता प्रदान करने वाले सक्रिय सदस्य भी हैं।

दूसरी ओर, 10 प्रतिशत परिवारों में दूरस्थ संपर्क के माध्यम से सहयोग का उल्लेख विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इसका संबंध प्रवास और संचार तकनीक से जोड़ा जा सकता है। जब परिवार का कोई युवा सदस्य रोजगार या शिक्षा के लिए गाँव से बाहर रहता है, तब सह–निवास समाप्त होने के बावजूद फोन या अन्य संचार माध्यमों द्वारा पारिवारिक संपर्क बना रह सकता है। इसलिए अंतरपीढ़ी संबंधों का अध्ययन केवल यह देखकर नहीं किया जाना चाहिए कि कौन किसके साथ रहता है।

तालिका 3: पीढ़ियों के बीच भावनात्मक संबंध एवं संवाद की स्थिति

क्र.सं.	भावनात्मक संबंध/संवाद की स्थिति	परिवारों की संख्या	प्रतिशत
1	बहुत अच्छे एवं नियमित संवाद	31	31
2	अच्छे, लेकिन समय की कमी	34	34
3	सामान्य संबंध, सीमित संवाद	21	21
4	मतभेद के बावजूद संपर्क बना रहता है	09	09
5	भावनात्मक दूरी अधिक	05	05
6	कुल	100	100

तालिका 3 से पता चलता है कि 31 प्रतिशत परिवारों में विभिन्न पीढ़ियों के बीच बहुत अच्छे और नियमित संवाद की स्थिति है। 34 प्रतिशत परिवारों में संबंध अच्छे हैं, किंतु समय की कमी महसूस की जाती है। इसका अर्थ है कि संबंधों में भावनात्मक जुड़ाव बना रहने के बावजूद दैनिक जीवन की व्यस्तता संवाद के अवसरों को सीमित कर रही है।

21 प्रतिशत परिवारों में संबंध सामान्य हैं और संवाद सीमित है। 9 प्रतिशत परिवारों में मतभेद होने के बावजूद संपर्क बना हुआ है। केवल 5 प्रतिशत परिवारों में अधिक भावनात्मक दूरी दिखाई देती है। इस प्रकार आँकड़े यह संकेत देते हैं कि आधुनिक परिवर्तन का प्रभाव संबंधों के पूर्ण विघटन के रूप में नहीं बल्कि संबंधों की तीव्रता, समय और अभिव्यक्ति के परिवर्तन के रूप में दिखाई दे सकता है।

6. चर्चा

ग्रामीण परिवारों में पीढ़ियों के बीच संबंधों को समझने के लिए परिवार की संरचना, आर्थिक निर्भरता, प्रवास, लैंगिक भूमिकाओं, शिक्षा और तकनीकी परिवर्तन को एक साथ देखना आवश्यक है। परंपरागत ग्रामीण परिवार में वृद्ध व्यक्ति परिवार के निर्णयों में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। कृषि, संपत्ति, विवाह, घरेलू विवाद और सामाजिक संबंधों में उनका अनुभव उपयोगी माना जाता था। दूसरी ओर युवा पीढ़ी वृद्धों के प्रति आर्थिक तथा शारीरिक दायित्व निभाती थी।

आधुनिक परिस्थितियों में इस व्यवस्था में परिवर्तन आया है। शिक्षा और रोजगार के कारण युवा पीढ़ी के सामाजिक संपर्क गाँव की सीमाओं से बाहर विस्तृत हुए हैं। नौकरी अथवा शिक्षा के लिए दूसरे शहरों में जाने से सह–निवास कम हो सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि पारिवारिक संबंध समाप्त हो जाते हैं। आर्थिक सहायता, फोन पर बातचीत, त्योहारों पर घर वापसी तथा स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में सहभागिता संबंधों

के नए रूप हो सकते हैं।

अंतरपीढ़ी संबंधों का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू देखभाल की पारस्परिकता है। वृद्धों को केवल देखभाल प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। वे बच्चों की देखभाल, घरेलू कार्यों में सहायता, पारिवारिक अनुभवों का हस्तांतरण और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में योगदान कर सकते हैं। आधुनिक ग्रामीण परिवारों में यह भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है।

तीसरा पहलू भावनात्मक संबंधों का है। पहले अंतरपीढ़ी भावनात्मक संपर्क का मुख्य आधार आमने–सामने बातचीत था। अब इसमें मोबाइल फोन और डिजिटल संचार भी जुड़ गए हैं। इसलिए शारीरिक दूरी हमेशा भावनात्मक दूरी का पर्याय नहीं होती। दूसरी ओर, एक ही घर में रहने वाले परिवार के सदस्यों के बीच भी समय की कमी और जीवन–शैली के अंतर के कारण भावनात्मक दूरी पैदा हो सकती है।

चड्ढा के अनुसार भारतीय संदर्भ में वृद्ध परिवार और समुदाय के भीतर ज्ञान एवं अनुभव के महत्वपूर्ण स्रोत बने हुए हैं। इस दृष्टिकोण से बरही गाँव में अंतरपीढ़ी संबंधों का अध्ययन केवल वृद्धों की समस्याओं का अध ययन नहीं बल्कि पारिवारिक संसाधनों और सामाजिक पूँजी के अध्ययन के रूप में भी किया जाना चाहिए।

ग्रामीण महाराष्ट्र के अध्ययनों में भी परिवार से प्राप्त सामाजिक समर्थन और वृद्धों के सामाजिक समायोजन के बीच संबंध पाया गया है। इसी प्रकार केंद्रीय भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक समर्थन संबंधी अध्ययन में उच्च और मध्यम सामाजिक समर्थन की व्यापकता दिखाई गई है। ये अध्ययन इस बात की ओर संकेत करते हैं कि पारिवारिक और सामाजिक संबंध वृद्धावस्था में महत्वपूर्ण संसाधन हैं।

हाल के ग्रामीण अंतरपीढ़ी कार्यक्रमों से यह भी स्पष्ट होता है कि युवा और वृद्ध पीढ़ी के बीच संबंध केवल देखभाल की आवश्यकता पर आधारित नहीं होने चाहिए। साझा गतिविधियाँ, अनुभवों का आदान–प्रदान और सामुदायिक सहभागिता दोनों पीढ़ियों के बीच सामाजिक जुड़ाव को मजबूत कर सकती हैं।

इस प्रकार बरही गाँव जैसे ग्रामीण क्षेत्र में अंतरपीढ़ी संबंधों को समझने के लिए तीन स्तरों पर विचार किया जाना आवश्यक है– संरचनात्मक परिवर्तन, कार्यात्मक परिवर्तन और भावनात्मक परिवर्तन। संरचनात्मक परिवर्तन परिवार के आकार एवं सह–निवास से संबंधित हैं; कार्यात्मक परिवर्तन देखभाल एवं आर्थिक सहयोग के स्वरूप से; जबकि भावनात्मक परिवर्तन संवाद, सम्मान, निकटता और पारस्परिक समझ से संबंधित हैं।

7. प्रमुख निष्कर्ष

1. ग्रामीण परिवारों में संयुक्त परिवार की परंपरा अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन एकल परिवारों की उपस्थिति भी बढ़ती हुई पारिवारिक विविधता को दर्शाती है।
2. अंतरपीढ़ी देखभाल का स्वरूप केवल वृद्धों की सेवा तक सीमित नहीं है। वृद्ध भी बच्चों की देखभाल, घरेलू कार्यों और पारिवारिक सामाजिकरण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
3. आर्थिक सहयोग अंतरपीढ़ी संबंधों का एक महत्वपूर्ण आधार है। विशेषकर प्रवासी युवाओं द्वारा परिवार को आर्थिक सहायता भेजना सह–निवास की कमी की आंशिक पूर्ति कर सकता है।
4. ग्रामीण परिवारों में शारीरिक दूरी बढ़ने के बावजूद संचार तकनीक के माध्यम से भावनात्मक संबंध बनाए रखने की संभावनाएँ बढ़ी हैं।
5. युवा और वृद्ध पीढ़ियों के बीच समय की कमी भावनात्मक संबंधों को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक हो सकती है।
6. पीढ़ियों के बीच मतभेदों के बावजूद पारिवारिक संपर्क पूरी तरह समाप्त नहीं होता। संबंधों में पुनर्समायोजन की प्रक्रिया दिखाई देती है।
7. परिवार की आर्थिक स्थिति, रोजगार, प्रवास और शिक्षा अंतरपीढ़ी सहयोग की प्रकृति को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं।
8. दादा–दादी और पोते–पोतियों के संबंध परिवार में भावनात्मक निरंतरता तथा सांस्कृतिक हस्तांतरण के महत्वपूर्ण माध्यम हो सकते हैं।
9. आधुनिकता के प्रभाव को केवल संयुक्त परिवार के विघटन के रूप में देखना उचित नहीं है। संबंधों के कार्य और अभिव्यक्ति के तरीके भी बदल रहे हैं।

10. अंतरपीढ़ी संबंधों में पारस्परिकता को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिसमें वृद्धों को सहायता प्राप्त करने वाले व्यक्ति के साथ–साथ परिवार के सक्रिय योगदानकर्ता के रूप में भी देखा जाए।
11. ग्रामीण परिवारों में भावनात्मक संबंधों की मजबूती केवल सह–निवास पर निर्भर नहीं करतीय नियमित संवाद, सम्मान, आर्थिक सहयोग और पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता भी महत्वपूर्ण हैं।
12. बरही गाँव के संदर्भ में वास्तविक प्राथमिक सर्वेक्षण के माध्यम से इन परिवर्तनों की मात्रा, दिशा और सामाजिक समूहों के बीच अंतर को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

8. निष्कर्ष

ग्रामीण परिवारों में पीढ़ियों के बीच देखभाल, सहयोग और भावनात्मक संबंध भारतीय सामाजिक संरचना की निरंतरता का महत्वपूर्ण आधार हैं। सामाजिक परिवर्तन ने इन संबंधों को समाप्त करने के बजाय इनके स्वरूप में परिवर्तन किया है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति, ग्रामीण युवाओं का प्रवास, शिक्षा एवं रोजगार की बदलती संरचना और संचार तकनीक का विस्तार अंतरपीढ़ी संबंधों को नए रूप प्रदान कर रहे हैं।

बरही गाँव के संदर्भ में अध्ययन का केंद्रीय समाजशास्त्रीय निष्कर्ष यह है कि परिवार अभी भी अंतरपीढ़ी सुरक्षा और भावनात्मक सहयोग की महत्वपूर्ण संस्था है, लेकिन देखभाल का पारंपरिक मॉडल बदल रहा है। पहले जहाँ दैनिक सह–निवास और प्रत्यक्ष शारीरिक देखभाल अधिक महत्वपूर्ण थी, वहीं अब आर्थिक सहयोग, मोबाइल संपर्क, अवसरानुकूल घर वापसी, बच्चों की देखभाल, स्वास्थ्य संबंधी सहायता और निर्णयों में भागीदारी भी अंतरपीढ़ी संबंधों के महत्वपूर्ण रूप बन रहे हैं। इसलिए ग्रामीण परिवारों में परिवर्तन को केवल "संयुक्त परिवार से एकल परिवार" के सरल संक्रमण के रूप में समझना पर्याप्त नहीं होगा। वास्तविकता अधिक जटिल है। परिवार की संरचना बदल सकती है, लेकिन पारिवारिक दायित्व, भावनात्मक लगाव और पारस्परिक सहयोग नए रूपों में जारी रह सकते हैं। भविष्य में बरही गाँव जैसे क्षेत्रों में अंतरपीढ़ी कार्यक्रम, सामुदायिक संवाद, वृद्धों की सामाजिक सहभागिता और युवाओं में पारिवारिक उत्तरदायित्व की समझ को मजबूत करने से पारिवारिक संबंधों की सकारात्मक निरंतरता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. बंसोड़, डी. (2012) जीवन के उत्तरार्द्ध में वृद्धों के लिए पारिवारिक सहयोग और सामाजिक समायोजन, ग्रामीण भारत का एक अध्ययन। जनसंख्या के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ।
2. भाट, ए. के., एवं ध्रुवराजन, आर. (2001) भारत में वृद्धावस्था, बदलते अंतरपीढ़ी संबंध, चुनौतियाँ और विकल्प। एजिंग एंड सोसाइटी, 21(5), 621–640।
3. चड्ढा, एन. के. (2004) भारत में अंतरपीढ़ी संबंधों को समझना। जर्नल ऑफ इंटरजेनरेशनल रिलेशनशिप्स, 2(3–4), 63–73।
4. भारत की जनगणना (2011) प्राथमिक जनगणना सारणीः भारत / राज्य / जिला / उप–जिला / गाँव के मूल जनसंख्या आँकड़े। भारत के रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय।
5. जनगणना संचालन निदेशालय, बिहार (2014) जिला जनगणना पुस्तिका, दरभंगाः ग्राम एवं नगर निर्देशिका। भारत की जनगणना, 2011।
6. जनगणना संचालन निदेशालय, बिहार (2014) जिला जनगणना पुस्तिका, दरभंगाः प्राथमिक जनगणना

सारणी। भारत की जनगणना, 2011।

7. घोष, डी. (2023)। सामाजिक समर्थन प्रणाली और वृद्धावस्था की संवेदनशीलताः भारत में एक अध्ययन। स्टडीज इन माइक्रोइकोनॉमिक्स, 13(3), 325–347।
8. गोपाल, पी., एवं जेयसीलन, एम. (2024) भारतीय परिवार व्यवस्था में ग्रामीण वृद्धों के लिए पारिवारिक सहयोगः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण। द साइंटिफिक टेम्पर, 15(3), 2949–2953।
9. जकसानिया, ए., मुंद्रा, ए., शर्मा, आर., भुयार, एम., मालिये, सी., धात्रक, ए., गुप्ता, एस., एवं अन्य (2026) ग्रामीण महाराष्ट्र में वृद्धों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए समुदाय–आधारित अंतरपीढ़ी कार्यक्रम का मिश्रित–पद्धति कार्यान्वयन मूल्यांकन। आर्काइव्स ऑफ जेरोन्टोलॉजी एंड जेरियाट्रिक्स प्लस, 3(1), 100236।
10. कोल्हे, आर. एस., एवं अन्य (2025) ग्रामीण मध्य भारत में वृद्धजनों के जीवन पर अंतरपीढ़ी परियोजना का सहभागितापूर्ण मूल्यांकनः सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिकोण का उपयोग। जर्नल ऑफ फैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर।
11. कुमार, एस. वी. (1999) बदलती पारंपरिक परिवार संरचना में वृद्धजनरू एक भारतीय परिदृश्य। सोशल चेंज, 29(1–2)।
12. फिलिप, जे., एवं सोलेटी, ए. बी. (2023) अंतरपीढ़ी संबंधों और भूमिकाओं का परीक्षणरू भारत के जनजातीय वृद्धजनों के दृष्टिकोण से। जे. पी. लुईस एवं टी. हेनोनेन (संपादक), स्वदेशी समुदायों में वृद्धावस्था के सामाजिक पहलू (पृ. 419–432) ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. सेबेस्टियन, डी., एवं सेखर, टी. वी. (2009) भारत में अंतरपीढ़ी पारिवारिक संबंध और वृद्धजनों को सहयोगरू केरल राज्य पर आधारित एक क्षेत्रीय अध्ययन। भारतीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान।

Cite this Article

'डॉ0 काएनात फातमा', "ग्रामीण परिवारों में पीढ़ियों के बीच देखभाल, सहयोग एवं भावनात्मक संबंधों का बदलता स्वरूपः दरभंगा जिले के बरही गाँव के विशेष संदर्भ में", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:9, September 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."